Vol. 5, Issue. 2 (July 2016) pp. 41-44 Sangeet Galaxy
ISSN: 2319-9695

'संगीत की उत्पत्ति : एक विश्लेष्णात्मक अध्ययन'

नागेन्द्र मिश्र
शोधछात्र
संगीत एवं प्रदर्शन कला विभाग
इलाहाबाद, विश्वविद्यालय, इलाहाबाद।
Email- nagendra31791@gmail.com

जहाँ तक संगीत की उत्पत्ति का प्रश्न है, मनुष्य की सृष्टि के प्रथम दिन से ही हम संगीत के अस्तित्व को मान सकते हैं। हाँ, यह अवश्य है कि क्रम–विकास के पथ का अनुसरण करते हुए ही संगीत उस प्राचीन स्वरूप से अपने वर्तमान स्वरूप को प्राप्त हुआ है।[1]

संगीत प्रकृति की एक सर्वाधिक सुन्दर रचना है। अनेक ग्रन्थों में संगीत की उत्पत्ति से सम्बन्धित अलग–अलग धारणाएं मिलती है। इनमें से कुछ धार्मिक दृष्टिकोंण लिए हुए हैं तो कोई मनोवैज्ञानिक। कुछ जल से संगीत की उत्पत्ति मानते है तो कुछ पक्षियों से।''[2]

संगीत के उद्भव पर हम 3 दृष्टियों से विचार कर सकते है। 1– भौतिक 2– आतिभौतिक 3– मानसिक।

1– भौतिक–भौतिक शास्त्र के विद्वानों ने बताया है ध्वनि 2 प्रकार की होती है (क) संगीतोपयोगी ध्वनि (2) संगीतेतर ध्वनि। संगीतोपयोगी ध्वनि को नाद तथा संगीतेतर ध्वनि को 'राव' कहते है। नाद दो प्रकार का होता है– (क) अनाहत (ख) आहत।

अनाहत नाद बिना किसी आघात के उत्पन्न होता है, वह संगीत के लिए उपयोगी नहीं होता। क्योंकि वह रंजक नहीं है। वह मुक्तिदायक होता है। आहत नाद आघात से उत्पन्न होता है। उस 'आहत' ध्वनि को, जिसमें नियमित और सतत् कम्पन होता है, संगीत में नाद कहते है।' नियमित और सतत् कम्पन का यह वैशिष्ट्य है कि वह रंजकता पैदा करता है। भौतिक दृष्टि से ध्वनि की नियमितता और सन्तातता से ही संगीत का उद्भव होता है।

2–आतिभौतिक– दार्शनिकों ने नाद के चार भेद माने है– परा, पश्यन्ती, मध्यमा और वैखरी। इसमें से मध्यमा को संगीतोपयोगी नाद अर्थात् स्वर का आधार माना गया है। मध्यमा द्वारा नियमित नाद स्वर में प्रस्फुटित हो उठता है।

यह संगीतोपयोगी नाद का आति भौतिक स्वरूप हो सकता है, किन्तु मानव के हृदय में संगीत का उत्थान या उद्भव कैसे होता है, उसका इससे पता नहीं चलता।

3–मानसिक या मनोवैज्ञानिक–इस दृष्टि से आधुनिक विद्वानों ने संगीत के उद्भव पर पर्याप्त विचार किया है।

डार्विन का कहना है–पशु मैथुन के समय कूजन या मधुर ध्वनि उत्पन्न करते है। मनुष्य ने जब इस प्रकार की ध्वनि का अनुसरण किया तब संगीत का उद्भव हुआ। डार्विन का यह सिद्धान्त भ्रान्त

प्रतीत होता है क्योंकि विद्वानों ने आदिम जातियों के अति प्राचीन गानों का अध्ययन करके यह निष्कर्ष निकाला कि वे प्रायः प्रकृति की शक्तियाँ, देवी–देवताओं की उपासना से सम्बद्ध है, कामुक नहीं।'[3]

फ्रायड के अनुसार ''संगीत का जन्म एक शिशु के समान मनोवैज्ञानिक आधार पर हुआ। जिस प्रकार एक शिशु, हसना, रोना अपने आप ही सीख जाता है, उसी प्रकार संगीत का प्रादुर्भाव मनोविज्ञान के अनुसार हुआ।

जेम्स लैंग के अनुसार' ''मानव ने बोलना, चलना, सीखा फिर धीरे–धीरे क्रियाशील होने पर उसके अन्दर संगीत स्वतः ही उत्पन्न हो गया।''[4]

एक फारसी लेखक के अनुसार पहाड़ों पर 'मूसीकार' नामक एक पक्षी होता है जिसकी नाक में बांसुरी के समान सात छिद्र होते हैं, इन्हीं सात छिद्रों से सात स्वरों की व्युत्पत्ति हुई।''[5]

एक विद्वान कार्ल स्टम्फ की यह धारणा है कि मानव ने जब ध्वनि के द्वारा संकेत करना प्रारम्भ किया तो भाषा का प्रादुर्भाव हुआ। जब वह ऊँची आवाज से चिल्लाता तो वह एक विशेष ध्वनि पर कुछ क्षण के लिए ठहरता। विशेष ध्वनि पर कुछ क्षण के लिए ठहरने पर एक विशेष तारता उत्पन्न होती थी और उसी ने स्वर का रूप ग्रहण कर लिया तथा उनके मत से भाषा संगीत का ही पूर्व रूप है। यह मत भी उपयुक्त प्रतीत नही होता क्योंकि स्वर की विशेषता रंजकता में है, न केवल तारता में।''[6]

अब हम संगीत की उत्पत्ति के विषय में जानने के लिए धार्मिक दृष्टिकोणों की तरफ उन्मुख होते है–

सभी धर्मों में संगीत के जन्म को लेकर भिन्न–भिन्न मत है। पुराविदों के अनुसार संगीत कला तथा शास्त्र का उद्भव स्वयंभू परमेश्वर से हुआ है। भारतीय परम्परा के अनुसार भगवान शिव नृत्य कला के आदि श्रोत हैं और भगवती सरस्वती गीत तथा वाद्य कला की प्रवर्तिका है। दत्तिल के अनुसार गान्धर्व के आदि प्रवचनाकार स्वयंभू ब्रह्मा है। नाट्यशास्त्र के अनुसार गान्धर्व के तत्वों को समाहित करने वाला नाट्यवेद स्वयं ब्रह्मा की रचना है। नृत्यकला को ताण्डव तथा लास्य रूप भगवान शिव तथा पार्वती की देन माना जाता है।''[7]

एक अन्य मतानुसार ब्रह्मा ने संगीत का निर्माण किया तथा उसे शिव जी को दिया, शिव से यह सरस्वती जी को मिला, सरस्वती जी से नारद को तथा नारद जी ने इसका प्रचार गान्धर्वो किन्नरों आदि में किया। इस प्रकार संगीत प्रसारित होता गया।

एक प्रसिद्ध इतिहासकार ओलक सथोवर ज्ञान को संगीत के जन्म का कारण मानते हैं, उनके मतानुसार, ''संगीत मानव के साथ आया, अथवा मानव ने विश्व में आकर जल्दी से संगीत सीख लिया। प्रारम्भिक अवस्था में मानव जंगली अवस्था में था अतः संगीत ही नहीं अपितु अन्य किसी भी कला का जन्म उस समय नहीं हुआ होगा। मानव को जब भाषा का ज्ञान आया होगा, तथा

यह ज्ञान धीरे–धीरे बढ़ा होगा तो मानव को किसी चीज़ की कमी लगी होगी इस कमी को संगीत नाम दिया गया होगा।

कुछ विद्वान संगीत का जन्म पक्षियों से मानते हैं, जिनमें पं0 दामोदर मिश्र का मत प्रमुख है उनके मतानुसार मोर से षड्ज, चातक से ऋषभ, बकरा से गान्धार, कौआ से मध्यम, कोयल से पंचम, मेढ़क से धैवत और हाथी से निषाद, इस प्रकार संगीत के 7 स्वरों की व्युत्पत्ति हुई।''[8]

एक अन्य भारतीय परम्परानुसार संगीत का सम्बन्ध वेदों से मान्य है वेद का बीजमन्त्र है, ओम। ओम के तीनो अक्षर– अ, उ, म तीन ईश्वरीय शक्तियों के द्योतक है।

अ= ब्रह्मा की शक्ति का द्योतक है।

उ= विष्णु की शक्ति का द्योतक है।

म = महेश की शक्ति का द्योतक है।

इन तीनों अक्षरों का ग्रहण ऋग्वेद, सामवेद और यजुर्वेद से किया गया है। इन अक्षरों के संयोग से ही 'ओम' शब्द निर्मित हुआ है। संगीत के सप्त स्वर आदि ओंकार (ओम) के ही अन्तर्विभाग है। शब्द और स्वर की व्युत्पत्ति ओम के गर्भ से हुई है। यथार्थतः ओम शब्द ही संगीत का जनक है। इसमें लय, ताल और स्वर का समावेश है।''[9]

एक अन्य कथानुसार संगीत की उत्पत्ति पत्तों पर जल की बूँदे गिरने से होती है। नारद और स्वाति मुनि से सम्बन्धित एक कथा का वर्णन इस प्रकार है– एक दिन स्वाति मुनि अपने आश्रम से पानी लेने के लिए सरोवर गये। संयोग से उसी समय वर्षा होने लगी। वर्षा की बूँदे पहले मन्द गति से फिर तेजी से सरोवर में खिले कमलों की छोटी–छोटी पंखुड़ियों पर गिरने लगी। ऐसा होने से अनेक प्रकार की ध्वनियाँ उत्पन्न होने लगी। स्वाति मुनि को वे सब ध्वनियाँ बहुत ही कर्णप्रिय लगी और उनके स्वरूप को अपने मस्तिष्क में ठीक से धारण करके वे अपने आश्रम वापस आ गये। वहाँ आकर उन्होंने विश्वकर्मा को यह सब वृतान्त बताया और किसी ऐसे वाद्य का निर्माण करने को कहा जिससे सब प्रकार की ध्वनियाँ निकलती है और इस प्रकार संगीत का जन्म हुआ।''[10]

निष्कर्ष–

इस प्रकार हम देखते है कि संगीत के जन्म को लेकर भिन्न–भिन्न कथाएं व मत मिलते है, परन्तु ऐतिहासिक तथ्य अभी भी प्राप्त नहीं है। संगीत के विकास के इतिहास को सभ्यता और संस्कृति के विकास से अलग नहीं किया जा सकता।

सभ्यता के विकास के साथ ही संगीत का जन्म होना संभव है और यह भी सच है कि संगीत का स्तर उस काल की संस्कृति और सभ्यता के स्तर पर भी निर्भर करता है, जैसे–जैसे सभ्यता का विकास होता है वैसे–वैसे संगीत भी उत्कृष्ट रूप प्राप्त करता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

लेखक	पुस्तक	प्रकाशक	पृ0सं0
1. स्वतन्त्र शर्मा	भारतीय संगीत एक ऐतिहासिक विश्लेषण	टी0एन0 भार्गव एण्ड सन्स 2A, बेली रोड न्यू कटरा, इलाहाबाद	4
2. मृत्युन्जय शर्मा	संगीत मैनुअल	H.G/ Publications(India) New Delhi-110062	83
3. ठाकुर जयदेव सिंह	भारतीय संगीत का इतिहास	विश्वविद्यालय प्रकाशन, चौक वाराणसी.221001	2
4. मृत्युन्जय शर्मा	संगीत मैनुअल	H.G/ Publications(India) New Delhi-110062	83
5. स्वतन्त्र शर्मा	भारतीय संगीत एक ऐतिहासिक विश्लेषण	टी0एन0 भार्गव एण्ड सन्स 2A, बेली रोड न्यू कटरा, इलाहाबाद	5
6. ठाकुर जयदेव सिंह	भारतीय संगीत का इतिहास	विश्वविद्यालय प्रकाशन, चौक वाराणसी.221001	2
7. स्वतन्त्र शर्मा	भारतीय संगीत एक ऐतिहासिक विश्लेषण	टी0एन0 भार्गव एण्ड सन्स 2A, बेली रोड न्यू कटरा, इलाहाबाद	4
8. मृत्युन्जय शर्मा	संगीत मैनुअल	H.G/ Publications(India) New Delhi-110062	83
9. स्वतन्त्र शर्मा	भारतीय संगीत एक ऐतिहासिक विश्लेषण	टी0एन0 भार्गव एण्ड सन्स 2A, बेली रोड न्यू कटरा, इलाहाबाद	7
10. विजय शंकर मिश्र	तबला–पुराण	कनिष्क पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली	6